Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 5, Sept-Oct – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 05/09/2020 Accepted on : 25/09/2020 Publication Date: 30/09/2020

उत्तर - आधुनिक विमर्श और हिंदी कविता

सुभद्रा कुमारी सिन्हा
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
जे.ई.एस. महाविद्यालय जालना, महाराष्ट्र
ईमेल - subhadra.bharti@gmail.com

शोध – सारांश: उत्तरआधुनिक अवधारणा पश्चिम की देन है | यह अवधारणा आधुनिकता के विरोध में आई | भूमंडलीकरण के बाद से उत्तरआधुनिक सोच को और हवा मिली | उत्तरआधुनिकता में प्रत्येक व्यक्ति की बौद्धिकता, विवेक, तथा स्वतंत्रता को महत्व दिया गया | कोई किसी के विचार को मानने वाला नहीं | अतः समाज में विरोध बढ़ता गया | सत्ता में हिस्सेदारी के लिए वाद – विवाद और संवाद होने लगे | फलस्वरूप विविध विमर्शों का जन्म हुआ | उत्तरआधुनिक विमर्श अनुपस्थिति को दर्ज करने वाला विमर्श है यानी जो कल तक अनुपस्थित था वह आज उपस्थित होने के लिए संघर्षरत है | आज की हिंदी कविता उत्तरआधुनिक दृष्टिकोण से सीधे- सीधे प्रभावित है | विभिन्न कवियों की कविता में उत्तरआधुनिक दृष्टिकोण सघन होकर उतरती है | अतः हिंदी कविता में विविध विमर्शमूलक विचारों का अंकन हुआ है |

मुख्य शब्द : उत्तरआधुनिकता, बौद्धिकता, मार्क्सवादी, भूमंडलीकरण, विमर्श, यथार्थ |

प्रस्तावना:

उत्तर आधुनिकता एक अवधारणा है जो वर्तमान में आए हुए परिवर्तनों को व्याख्यायित करती है | बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से कला – साहित्य, समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति दर्शन आदि सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुआ | उन परिवर्तनों पर उत्तर आधुनिकता की छाया है जो पश्चिम की देन है | उत्तर - आधुनिक विचारधारा समाज में पहले से विद्यमान विचारधाराओं का अंत करके उनकी जगह अपना स्थान बनाती है | वह हाशिए के लोगों को केंद्र में लाती है | हमारा समाज अभी भी स्त्री, दलितों, आदिवासियों, और उनकी सामूहिक अस्मिता के प्रति अनुदार रहा है | उत्तर-आधुनिक समाज में इन समूहों की आवाज को सहज भाव से स्वीकार किया गया है | फलस्वरूप विभिन्न विमर्शों का उद्भव हुआ है |

उत्तर आधुनिकता की अवधारणा पर विचार करने से पहले मैं इसके पूर्व की स्थिति पर प्रकाश डालना चाहूंगी | 17वीं शदाब्दी से आधुनिक युग का प्रारंभ माना जाता है | 17वीं शताब्दी से पूर्व के काल को पूर्व आधुनिक काल माना जाता है | यह युग ईश्वरीय सत्ता का युग था, विश्वास का युग था | उसमें यह कहा गया कि राज्य ईश्वर का प्रतिनिधि है और राज्य जो भी करेगा या कहेगा उसे एक प्रकार से ईश्वरीय आदेश माना जायेगा | वही अंतिम सत्य होगा | चूँकि यह विश्वास का युग था अतः इस युग को डार्क एज भी कहा जाता है |

17 वीं शताब्दी में आकर यह व्यवस्था टूट गयी क्योंकि इस समय दो महत्वपूर्ण विचारक फ्रांसिस बेकन तथा जेकार्त ने इस बात को उठाया कि जिसको हमलोग ईश्वरीय सत्ता कह देते हैं वास्तव में वह ईश्वरीय सत्ता नहीं होती | वह किसी व्यक्ति का अपना चिंतन होता है अपना विवेक होता है जिसने यह भ्रम फैला दिया है कि मैं ईश्वर का प्रतिनिधि हूँ और उनके आदेश को आप तक पहुंचा रहा हूँ | आधुनिक युग में विश्वास की परम्परा से अलग हटकर विवेक की सत्ता, विवेक की प्रधानता पर बल दिया गया | बेकन ने कहा- तर्क की शक्ति को, वैज्ञानिकता को जीवन में प्रधानता होनी चाहिए और इसी बात को जेकार्त ने आगे बढाया | इस काल को एज ऑफ एन्लाईटमेंट कहा गया |

आगे चलकर कुछ लोगों ने इस युग की मान्यताओं का भी खंडन किया | फूको और देरिदा ने प्री मॉडर्निज़्म और मॉडर्निज़्म दोनों का विरोध किया | इनका कहना था कि हम किसी एक व्यक्ति के तर्क को नहीं मानेंगे चाहे वह व्यक्ति कितना ही महान क्यों न हो | उत्तर आधुनिकता में प्रत्येक व्यक्ति की बौद्धिकता, विवेक, तथा स्वतंत्रता को महत्व दिया गया | लेकिन समाज को चलाने के लिए एक विचार की आवश्यकता होती है | यदि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से असहमत हो जाए जाए तो फिर ये समाज कैसे चलेगा ? उत्तर आधुनिकता की सबसे बड़ी समस्या यही है कि वे हमारे सामने कोई एक सत्य, एक दर्शन, एक विचारधारा नहीं दे सकता | अतः इससे समाज में विरोध बढ़ता है |

यह उत्तर आधुनिकता पश्चिम कि देन है और पश्चिम में प्रभावित होने वाली किसी भी चिंतन पद्धति का हिंदी में चर्चा का विषय बनते देर नहीं लगती | आधुनिकता के विरोध में आई उत्तर आधुनिकता की भी चर्चा होने लगी | उत्तरआधुनिकता के कारण जो विसंगतियां आई उन विसंगतियों के साथ संघर्ष करने का चिंतन उत्तरआधुनिक विमर्श है | समूचे साहित्यिक विमर्श उत्तरआधुनिकता की देन है | अब प्रश्न उठता है कि विमर्श क्या है? सत्ता में हिस्सेदारी के लिए जो वाद विवाद और संवाद होता है वही विमर्श कहलाता है | सोच विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना ही विमर्श है | इसमें सभी व्यक्ति का विचार अलग अलग हो सकता है | विमर्श समकालीन साहित्य की शक्ति है | हिंदी कविता में भी विविध विमर्शमूलक विचारों का अंकन हुआ है |

20वीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों में उत्तर आधुनिक विमर्श को साहित्य में अभिव्यक्ति मिली | उत्तरआधुनिक कविता में विखंडन की प्रवृति अपूर्व रूप में दिखाई देती है | यह उत्तर आधुनिक सोच का ही परिणाम है कि कविता में विनाशकारी मानसिकता के दर्शन होते हैं | सामजिक माहौल को बिगाड़ने की मानसिकता ही विखंडित मानसिकता है | उत्तर आधुनिक आलोचक अमरजीत कौंके की कविता में विखंडनवादी मानसिकता पर करारा व्यंग्य किया गया है | प्रस्तुत कविता विखंडनवादी मानसिकता को दर्शाती है |

“जब मैंने / भूख को भूख कहा / प्यार को प्यार कहा तो उन्हें बुरा लगा / जब मैंने पक्षी को पक्षी कहा / आकाश को आकाश कहा / तो उन्हें बुरा लगा / परन्तु जब मैंने / कविता के स्थान पर/ अकविता लिखी / औरत को / सिर्फ योनि बताया / रोटी के टुकड़े को चाँद लिखा / तो वे बोले / वाह! भई वाह!! क्या कविता है |”१

राजेश जोशी एक मार्क्सवादी कवि हैं | लेकिन कुछ आलोचक उन्हें उत्तरआधुनिक कवि मानते हैं | उत्तर आधुनिक इस अर्थ में की वे अपनी कविता में जीवन की अपूर्णता को प्रकट करते हैं | कुछ भी पूर्ण न होना उत्तर आधुनिकता के लक्षण हैं | उत्तर आधुनिकतावाद किसी भी चीज को पूर्ण नहीं मानता | न पूर्ण जीवन, न विचार, न पूर्ण सत्य | अपूर्णता का अहसास ही उत्तरआधुनिकता है | ‘अधूरी कविताएँ’ में वे लिखते हैं –

“यूं भी दुनिया में सबसे बड़ी तादात अधूरी कविताओं की है
पूरी कविताओं में भी कहीं न कहीं बचा रहता है एक अधूरापन
हर मुकम्मिल कविता को लिखना चाहता है
दूसरा कवि दूसरी तरह
और मजा यह है कि ऐसा करके न पहला संतुष्ट होता है न दूसरा
हर कवि को हमेशा ही लगता है कि कविता में कहीं कुछ छूट गया है
जो होना था ..... हो सकता था .....|”२

उत्तर आधुनिक दृष्टीकोण ऐसी है कि मनुष्य जीवन से असंतुष्ट है | असंतुष्टता का भाव मनुष्य के मन में विद्यमान रहता है |

उत्तर आधुनिक विमर्श की शुरूआत संस्कृति के क्षेत्र से हुई | संस्कृति का क्षेत्र आम जीवन की हलचलों का क्षेत्र है | पूँजी, मुनाफा और प्रभुत्व के विस्तार कि लड़ाईयां इसी क्षेत्र में लड़ी जा रही है | समाज में जिस किस्म का विघटन लगातार बढ़ रहा है, उन अराजक स्थिति के लिए यह उत्तरआधुनिक स्थितियां जिम्मेदार है जो सत्ता की ओर से लादी जा रही है | उत्तरआधुनिकता में उपभोक्तावाद एक प्रमुख अवधारणा के रूप में स्वीकार किया गया है | इस उपभोक्तावाद को हिंदी के अनेक विद्वानों ने पश्चिम के आक्रमण के रूप में देखा है जो उपभोग के जरिये अन्य देशों की संस्कृति पर अपना कब्ज़ा जमाना चाहता है | यही कारण है कि समाज में इसकी तीखी आलोचना की गई | इस पर विचार विमर्श होने लगे |भूमंडलीकरण के आने के बाद से दुनिया इतनी तेजी से बदल रही है कि सामान्य आदमी इससे ताल मेल नहीं बिठा पा रहा है | भारतीय बाजार पर बढ़ते विदेशी वर्चस्व ने एक ऐसी दुनिया को जन्म दिया है जो अमीरों की दुनिया है | तीसरी दुनिया का एक बड़ा वर्ग हक्का बक्का होकर इस बदलाव को देख रहा है | सामान्य मनुष्य इस भीड़ में कहीं खो गया है | अशोक वाजपेयी को एक उत्तरआधुनिक कवि माना जाता है | उनकी कविता ‘घास में दुबका आदमी’ में इस तरह की मार्मिक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है|

“ कहाँ है वह घर

जहाँ हम जाना चाहते हैं

जहाँ हर मकान दुकान में बदलने की होड़ में है

उस भीड़ और हाहालती में खोजना मुश्किल होगा |”३

उत्तरआधुनिकतावाद का कारण नव पूंजीवाद है जिसमें मनुष्य का संबंध मानवीय भावनाओं से टूट गया है | बाहर से सबकुछ ठीक दीखता है पर भीतर एक महाशून्य है, एक खालीपन है | इस युग में मनुष्य समाज से विच्छिन्न कर दिया गया है | मनुष्य अपनी

उदासियों को सह जाना चाहता है क्योंकि वह उम्मीद छोड़ चुका है | वह प्रत्येक चीज को संदेह की चश्में से देखता है | बोधिसत्व हमारे समय के एक महत्वपूर्ण कवि हैं | बोधिसत्व की कविता 'पागलदास' उत्तरआधुनिक माहौल में आदमी के अकेलेपन को दर्शाती है |

"अयोध्या में बसकर / उदास रहते थे पागलदास /यह बताया उस मल्लाह ने /जिसने सरयू में प्रवाहित किया उन्हें / मैंने पूछा -/ आखिर क्यों उदास रहते थे पागलदास / अयोध्या में बसकर भी / उसने कहा- कारण तो बता सकते हैं वे ही / जो जानते हो पागलदास को ठीक से / मैं तो आते – जाते सुनता था / उसका रोदन / जिसे छुपाते थे वे पखावज की थापों में |"४

मानव जाति के विकास के लिए विघटनवादी मानसिकता एक बहुत बड़ा अवरोध है | विघटन में अलगाव, टूटन, विनाश आदि के भाव निहित हैं | विघटन व्यक्ति, समाज, जाति, एकता तथा राष्ट्र आदि के पतन को द्योतित करता है | उत्तरआधुनिक समय में समाज में आस्था और विश्वास नष्ट हो रहे हैं | भावनाओं की हत्या हो रही है और बौद्धिकता जीवन की सच्चाई बन गई है | अति बौद्धिकता अहंकार को जन्म देती है | आज हिंदी कविता में भी विघटनवादी विचारों की पर्याप्त मात्रा में अभिव्यक्ति मिली है | 'ऐसी कैसी नींद' शीर्षक कविता में भगवत राउत वर्तमान स्तिथि पर चिंता व्यक्त करते हैं |

" मैं तो जग के इस विराट में अपनी दुनिया खोज रहा हूँ

जिसे रचा था मैंने अपने ही हाथों से

कौन चुराकर उसे ले गया

ऐसी कैसी नींद लग गयी |"५

मनुष्य आज हर चीज नफा नुकसान की तराजू पर तौलने लगा है | बाजारू मूल्य – बोध में फंसकर उसने संबंधों को भी ठुकरा दिया है | सुख, भोग, विलास की कामना ने संबंध विघटन को बढाया है | स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए विघटन की स्थिति निश्चय ही हानिकारक है |

बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में स्त्री विमर्श की चर्चा अधिक मिलती है | हिंदी काव्य जगत में कवयित्रियाँ अब अनुभूति की प्रामाणिकता तथा जीवन की समझ के साथ नए विमर्श को जन्म दे रही हैं | आज की स्त्री वर्जित प्रदेश पर भी अपनी घुसपैठ बढ़ा रही है | वे अपने सभी अनुभवों को संप्रेषित करना चाहती हैं | अनामिका की कविता स्त्रियों में होने वाले प्रथम रजस्त्राव जैसे वर्जित प्रदेश को भी विमर्श में ले आती हैं जो कभी परदे में रखा जाता था | वे लिखती हैं-

"कुण्डलिनी सी जाग बैठी थी / लड़की पलंग पर/ उसकी सफ़ेद फ्रॉक और जांघिए पर/ किसी परी माँ ने काढ दिए थे / कत्थई गुलाब रात में / और सात बौने / क्यों गुत्थमगुत्थी / मचा रहे थे आज / उसके पेट में?/ अनहद सी / बज रही थी लड़की /"६

स्त्री विमर्श ने अपने अन्य संदर्भों के साथ- साथ बड़ी बेबाकी से अपनी देह के कथनों को उजागर किया है | उत्तर आधुनिकता में देह एक महत्वपूर्ण केंद्र है | उत्तरआधुनिक विमर्श में स्त्री इन मुद्दों के लिए स्पेस पा रही है |

आज स्त्री सदियों की खामोशी को तोड़कर सत्ता से सवाल करने लगी हैं | वह समझ चुकी है कि जिसे वह अपना यथार्थ समझती रही है वह महज एक पितृसत्तात्मक सामाजिक निर्मिती है | लेकिन अब वह इस पितृसत्तात्मक समाज से अपने को अलगाती है | वह अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह में इस अलगाव पर बल देती है | वह नहीं चाहती कि उसके व्यक्तित्व का विलय पुरूष सत्ता में हो जाए | बगैर अलगाव के स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्थापना नहीं हो सकती | अनामिका 'डाक टिकट' कविता में लिखती हैं –

"बच्चे उखाड़ते हैं / डाक टिकट / पुराने लिफाफों से जैसे- / वैसे ही आहिस्ता – आहिस्ता / कौशल से मैं खुद को / हर बार करती हूँ तुमसे अलग / थोड़ा सा विरल / झीना सा हो जाता है मेरा कागज / धुंधली पर जाती है मेरी तस्वीरें / पानी के छींटे से / और बाद उसके हवा मालिक / उड़ा लिए जाए मुझे, जहाँ चाहे |"७

अनामिक कहती हैं कि आज की स्त्री पुरुष की सत्ता में लीन होकर प्रसन्न भाव से रहने वाली नहीं हैं | वह आहिस्ता – आहिस्ता अपने को पुरूष से अलग करती है | आज के उत्तरआधुनिक समय में स्त्री विमर्श अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुका है | वह पुरानी रीति रिवाजों को तोड़कर अपने लिए नए समाज, नए विचार की स्थापना कर रही है |

उत्तरआधुनिक समय में अर्थ की महत्ता बढ़ने के साथ – साथ उपभोग की प्रवृति बढ़ने लगी, और यह उपभोग करने की बढ़ती कुप्रवृत्ति का ही परिणाम है कि आज धरती पर अनावश्यक रूप से दवाब बढ़ता जा रहा है | मनुष्य ने अपने स्वार्थ की खातिर प्रकृति का अन्धाधुन्ध दोहन किया है | इस दोहन से पर्यावरण असंतुलित होता है | संपूर्ण संसार में असंतुलन की यह समस्या आज सबसे अधिक विचारणीय मुद्दा है | आज पर्यावरण जैसे गंभीर मुद्दे पर विचार विमर्श की आवश्यकता है | इस पर विमर्श हो भी रहा है | कवि अरुण कमल की पर्यावरण

को लेकर यह चिंता नितांत प्रासंगिक है जो सोचने को विवश करती है | कवि अरुण कमल बाढ़ के आगमन के पश्चात की स्थिति का वर्णन अपनी कविता में करते हैं –

"धीरे धीरे उतरी है बाढ़ / पता नहीं कौन सी कोख में बचा हुआ जीवन / फिर से फेंकता है फंदा / फिर से अपनी जमीन पर लौट रहे हैं लोग बाग़ / लौट रहें हैं पशु पक्षी / लौट रहा है सूर्य / लौट रहा है सारा संसार / इस प्रलय के बाद |"८

औपनिवेशिक युग से पूर्व आदिवासियों की स्वतंत्र सत्ता थी | जल, जंगल, जमीन पर उनका अधिकार था | परन्तु जैसे – जैसे साम्राज्यवादी ताकतें बढती गयी, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का हस्तक्षेप बढ़ता गया वैसे - वैसे आदिवासियों का शोषण और उन पर अत्याचार भी बढ़ता गया | इनके संसाधनों पर जबरन कब्ज़ा किया जाने लगा तथा जमीन से उन्हें बेदखल किया गया | संबैधानिक प्रावधानों के बावजूद इस समुदाय की उन्नति का सपना साकार नहीं हो सका | फलतः सत्ता में हिस्सेदारी के लिए विरोध के स्वर उठने लगे | आदिवासी अपनी अस्मिता व अस्तित्व के लिए आवाज उठाने लगे | आदिवासी विमर्श आदिवासियों का तथाकथित सभ्य समाज के प्रति मुखर विरोध का स्वर है | यह एक ऐसा विमर्श है जिसमें इस समुदाय की परंपरा, रूढ़ियाँ, संस्कृति , अन्याय, अत्याचार, शोषण सभी कुछ बयान हो रहा है | कवि महादेव टोप्पो की कविता ' सबसे बड़ा खतरा' में प्रतिरोध के स्वर को देखा जा सकता है |

" यही है सबसे बड़ा खतरा

कि हम अपनी पहचान खो रहें हैं

खो रहें हैं कि हम अपने स्वाभाविक स्वर

न मिमिया रहे हैं न गरज रहे हैं

इसी कारण उंची अट्टालिकाओं में पंखों के नीचे

वे हमारी असमर्थता पर मुस्करा रहें हैं

इसीलिए मित्र ! आओ हम पहले

अपने कंठों में गरजती हुई आवाज भरें ....."९

आदिवासी समाज की पीड़ा को समझकर सिर्फ सहानुभूति दिखाने से काम नहीं चलेगा | जरूरत है एक ठोस रणनीति के तहत उन पर हो रहे अत्याचारों का डटकर मुकाबला करने की तभी इस विमर्श की सफलता और सार्थकता सिद्ध होगी|

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समकालीन कविता में काफी कुछ ऐसा लिखा गया है जिसमें उत्तर आधुनिकतावाद का जिक्र तो नहीं किया गया है परन्तु कविताओं के अर्थ उत्तरआधुनिक स्तिथि को स्पष्ट करते हैं | ऐसे ही कुछ कविताओं का मैं इस इस आलेख में चर्चा की हूँ जो उत्तरआधुनिक समय से टकराती है | आज साहित्य के सभी विमर्शों को उत्तरआधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है | उत्तर आधुनिक विमर्श अनुपस्थिति को दर्ज करने वाला विमर्श है यानी जो कल तक अनुपस्थित था वह आज उपस्थित होने के लिए संघर्षरत है और हिंदी कविता में इसकी उपस्थिति देखी जा सकती है |

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. अमरजीत कौंके, कविता कोश
2. दो पंक्तियों के बीच- राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, दूसरी आवृति २०१४ पृ.सं-१२
3. संवेद -६६, जुलाई २०१३, सं – किशन कालजयी पृ.सं – १०६
4. उर्वर प्रदेश, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण १९९९ पृ.सं – १३९
5. भगवत राउत, कविता कोश
6. अनामिका, कविता कोश
7. संवेद -६६ जुलाई २०१३ सं – किशन कालजयी, पृ.सं – १४२
8. अरुण कमल, कविता कोश
9. आदिवासी स्वर और नई शताब्दी, सं – रमणिका गुप्ता, आवृति संस्करण २०१४, वाणी प्रकाशन, पृ. सं- ५०